Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

राजेंद्र यादव के उपन्यास

Shashikant Kumar[1]* Dr. Ujlesh Agarwal[2]

[1] Research Scholar

[2] Assistant Professor CMJ University

सार - ***यह उस मध्यवर्गीय साधारण व्यक्ति की तस्वीर है जो अपनी अतृप्त लालसाओं और कुछ बनने की महत्त्वाकांक्षाओं के कारण परिस्थितियों से टकराता है, किन्तु उनका चक्रब्यूह तोड़ नहीं पाता है। अपने आदर्शों एवं मूल्यों के साथ समझौता करके मजबूरन विवश-स्थिति को जीने के अलावा उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है। वस्तुतः उन्होंने जीवन के बाह्य स्वरूप के अवलोकन मात्र के आधार पर ही नहीं, अपितु उसकी गहराई में पैठ कर भोगे हुए यथार्थ अनुभव के आधार पर अपने उपन्यासों का सृजन किया है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में चित्रित पात्र एवं घटनायें जीवंत और हमारे आस-पास के प्रतीत होते हैं। उनके उपन्यास मध्यवर्गीय व्यक्ति के दुःख-दर्द, संघर्ष-पराजय, घुटन-कुण्ठा, विवशता-परवशता, आकांक्षा-आशंका पूर्ण जीवन के अंधकारमय वर्तमान तथा आशाहीन भविष्य के मूल कारणों की खोज करते हुए तत्कालीन व्यवस्था की विसंगतियों तथा विडम्बनाओं को उद्घाटित करने के साथ-साथ उसके लिये जिम्मेदार शक्तियों के विरूद्ध खड़े होकर निरन्तर संघर्ष करने की भी प्रेरणा देते हैं।***

----------X----------

राजेन्द्र यादव: व्यक्तित्व तथा कृतित्व

किसी भी साहित्यकार के विचारों और आदर्शों को पूर्णतः समझने और जानने में उसका जीवन और व्यक्तित्व आधार भूमि का काम करता है। अतः मानव जीवन की दिशा निश्चित करने और उसे विशिष्ट रूपाकार देने में व्यक्ति की पैतृक, पारिवारिक, युगानुरूप, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों तथा उनकी मूल प्रवृत्तियों का पर्याप्त हाथ रहता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व के विषय में जानने हेतु उसके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उसकी मूल प्रवृत्तियों व अभिरूचियों आदि के विषय में जानना आवश्यक होता है। अतः उनके साहित्य के मूल में पहँुचने से पूर्व उनके जीवन में प्रवेश करना अनिवार्य होता है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके जीवन का अभिन्न पक्ष होता है जिसमें से किसी एक पक्ष का अध्ययन दूसरे पक्ष के अध्ययन के अभाव में अधूरा-सा रह जाता है। साहित्यकार का कृतित्व एक ओर उसके व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया होता है दूसरी ओर अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक हलचलों से अनुप्राणित होता है। साहित्यकार युग दृष्टा भी होता है और युग सृष्टा भी। एक ओर वह अपने युग में होने वाले परिवर्तनों, समस्याओं आदि पर नजर रखता है तो दूसरी ओर अपने साहित्य के माध्यम से एक नये युग के निर्माण में सहायता देता है। वस्तुतः साहित्यकार के साहित्य का उद्देश्य ही क्रांति लाना होता है। इस प्रकार साहित्य के प्रति लेखक के निजी दृष्टिकोण से सम्यक् परिचय प्राप्त कर लेने से उनके साहित्य को समझने और उसका विवेचन करने में पर्याप्त सहायता मिलती है।

राजेन्द्र यादव: व्यक्तित्व

राजेन्द्र यादव हिन्दी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनका नाम स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्यकारों में विशेष उल्लेखनीय है। राजेन्द्र यादव मुख्यतः सामाजिक चेतना के कथाकार हैं। उन्होंने साहित्य सृजन को स्वधर्म रूप में स्वीकार किया। अतः उन्होंने अपनी सर्जकता में अर्थ व राजनीति आदि को दृष्टि में रखकर समझौता नहीं किया। वे एक मात्र साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध बने रहंे। बाहरी दबावों से मुक्त होकर अपने लेखन को स्तरीय एवं प्रमाणिक बनाये रखने का उन्होंने सदैव प्रयत्न किया। यथार्थ एवं मानव मूल्यों की खोज के प्रति भी उनका झुकाव रहा है।

जन्म एवं बाल्यकाल

स्वातंत्र्योत्तर सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक राजेन्द्र यादव का जन्म 28 अगस्त सन् 1929 को उत्तर प्रदेश में आगरा के राजा मंडी मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता श्री मिस्त्रीलाल यादव और माता ताराबाई थी। अपने दस भाई-बहनों में राजेन्द्र यादव

www.ignited.in

सबसे बड़े थे। उनके जीवन का अधिकांश समय आगरा के राजा की मण्डी में व्यतीत हुआ। उनके बाल्यकाल का विवरण बहुत ही कम उपलब्ध है क्योंकि उनका विचार है कि "कलाकार का व्यक्तित्व उसका परिचय उसका विश्वास और उसकी प्रतिबद्धता सभी कुछ उसकी कला होती है। जो वहां नहीं है, उसका महत्त्व और मूल्य क्या और क्यों हो।" 1 राजेन्द्र यादव आरम्भ से ही मस्तमौला स्वभाव के रहे हैं। सूसीर में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे मवाना भेज दिये गये। मेरठ में अपने चाचा के यहां रहते हुए उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की।

वहां सब कुछ ठीक ही चल रहा था, किन्तु अचानक 9-10 वर्ष की अवस्था में हॉकी खेलते हुए उनकी एक टांग टूट गई थी और वे विकलांग हो गये। इस विकलांगता ने उन्हें जीवन के प्रति एक नये सत्य व नए दृष्टिकोण से परिचित कराया। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस विकलांगता के कारण उनकी शारीरिक गतिविधियां अवश्य प्रभावित हुई और अवरूद्ध भी हुई, परन्तु इस कमी को उन्होंने अपनी बौद्धिक और मानसिक गतिविधियों को बढ़ाकर पूरा किया। बाल्यावस्था के समान ही किशोरावस्था भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में अपना असाधारण महत्त्व रखती है। राजेन्द्र यादव के जीवन में भी इस काल का विशेष महत्त्व रहा है। उन्होंने एक स्थान पर लिखा है "कलाकार अपने किशोर काल में अपने यथार्थ से असंपृक्त नहीं हो पाता वह या तो उसमें रस लेता है या उसे जस्टिफाई करता है, और जिन्दगी भर कला के नाम पर आत्मकथा के टुकड़े देता रहता है।'

कबीरी अंदाज में अपने व्यक्तित्व को अपने कृतित्व में ढूँढ़ने की सलाह देने वाले, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर राजेन्द्र यादव अपने या अपनी रचनाओं के संबंध में चुप्पी साधे रहना ही उचित समझते हैं। उनके मतानुसार एक ईमानदार और प्रतिबद्ध रचनाकार की रचनाये ही उसका परिचय देने के लिए पर्याप्त है। उन्हीं के शब्दों में कहें तो, "एक तरह देखा जाये तो सारा ईमारदार कथा-लेखन औरों के यानी पात्रों के बहाने अपनी ही बात कहता है। कहीं बात घटनाओं, वार्तालापों और चरित्रों के स्तर पर होती है तो कभी अनुभवों, स्थितियों और उनकी प्रतिक्रियाओं के रूप में कभी इन सब अवधारणाओं, आस्था और निष्ठा की शक्ल में, होता सब 'अपना' या 'आत्मकथा' ही है।

ऐसे में "क्या ईमानदार कथा लेखक के पास ऐसा कुछ बचा रहता है कि वह अलग से 'आत्मकथा' लिख सके"4 'मुड़-मुड़के देखता हूँ' के अन्तर्गत उन्होंने लिखा भी है कि 'आत्मकथा व्यक्ति की हो या संस्कृति की दोनों इस गढ़न्त से मुक्त नहीं हैं। वे स्वतन्त्र कथा- रचनाएं (फिक्शन) हैं। वास्तविक नाम और स्थान कथा को विश्वसनीय बनाने की रचनात्मक तरकीबें (डिवाइस) होती है। कथा के प्रवाह में ध्यान न बटांए इसलिए कहानी और उपन्यासों में हम वास्तविक नामों, स्थानों को बदल देते हैं। वहां मुख्य तर्क कहानी है, आत्मकथा में मुख्य तर्क व्यक्ति है। दोनों जगह विश्वसनीयता का संकट स्थितियों-घटनाओं के चुनाव में कतर-ब्योंत करता है कभी-कभी कुछ पीढियाँ अगलों के लिए खाद बनती है। बीसवीं सदी के 'उत्पादन' हम सब 'खूबसूरत पैंकिग' में शायद वही खाद है। यह हताशा नहीं अपने 'सही उपयोग' का विश्वास है, भविष्य की फसल के लिए बुद्ध के अनुसार ये वे नावें हैं जिनके सहारे मैंने जिन्दगी की कुछ नदियां पार की हैं और सिर पर लादे फिरने की बजाय उन्हें वहीं छोड़ दिया है।'5 राजेन्द्र यादव ने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा, सुना, भुगता, अनुभव किया उन सबको अपने लेखन का अंग बना दिया। उनका लेखन उनके जीवन से अलग प्रतीत नहीं होता।

शिक्षा-दीक्षा

राजेन्द्र यादव के पिता मिस्त्रीलाल यादव को उर्दू में रूचि थी, अतः उनकी प्राथमिक शिक्षा उर्दू में हुई। प्रेमचंद के समान ही राजेन्द्र यादव पहले उर्दू में पढ़े और बाद में हिन्दी में आए। उनकी मैट्रिक तक की शिक्षा झाँसी में अपने पिता के साथ हुई। अपनी कक्षा में वे एक बुद्धिमान छात्र माने जाते थे। छोटी उम्र में ही राजेन्द्र को पढ़ने का शौक लगा था। पढ़ना खूब पढ़ना, सामने आई हर चीज को पढ़ना उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया। राजेन्द्र यादव की शिक्षा एम.ए. तक हुई है। उन्होंने एम.ए. हिन्दी की परीक्षा आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी से पास की। अंग्रेजी, बंगाली, उर्दू आदि भाषाओं पर भी उनका अधिकार है। अध्ययन के समान उन्हें लेखन में भी विशेष रूचि थी। साहित्य लेखन के अतिरिक्त डायरी और पत्र वे पूरे मनोयोग से लिखते थे। डायरी लेखन का प्रभाव उनके रचनात्मक साहित्य पर देखा जा सकता है। उसके अतिरिक्त वे पत्र लेखन के काम में भी सतर्क रहते थे। साहित्य लेखन राजेन्द्र यादव के जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है।

एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त राजेन्द्र यादव यदि चाहते तो वे सहज ही प्राध्यापक बन सकते थे। पण्डित जगन्नाथ तिवारी ने उन्हें अपने विभाग में लेना चाहा था परन्तु तब तक उन्हें लेखक के रूप में प्रसिद्धि भी मिल चुकी थी। स्वाभिमानी स्वभाव के कारण नौकरी के झंझट में पड़ना

www.ignited.in

उन्हें पंसद नहीं था। फिर भी उन्होंने कुछ एक महिनों के लिए जियोलाजिकल सर्वे में हिन्दी अध्यापक का काम किया था। राजेन्द्र यादव के जीवन में साहित्यिक प्रेरणा के अंकुरण तभी फूटने लगे थे जब वे 'भिक्खी चाटवालों' से तरह-तरह की कहानियां सुना करते थे। इस प्रकार कथा कहानियों के संस्कार उनके मन पर बचपन से ही पड़े उनके बचपन का काल आजादी की लड़ाई का कला था। आजादी की लड़ाई में साहित्यकार भी अपना दायित्व निभा रहे थे। राष्ट्रकवि दिनकर भी स्वतंत्रता सेनानी को अपनी कविता के माध्यम से प्रेरित एवं उत्साहित करने का कार्य कर रहे थे। राजेन्द्र यादव उन्हें बहुत पढ़ते थे। कवि दिनकर की इन काव्य पंक्तियों ने उनके किशोर मन पर अमिट छाप छोड़ दी - 'सेनानी करो प्रयाण अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है, ये नखत अमा के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है।''6 इन्हीं पंक्तियों के प्रभाव स्वरूप यादवजी का 'प्रेत बोलते हैं' उपन्यास बाद में 'सारा आकाश' शीर्षक हो गया।

राजेन्द्र यादव: कृतित्व

राजेन्द्र यादव के साहित्यिक जीवन का आरम्भ किशोरावस्था काल में ही हुआ। किशोरावस्था काल में भिक्खी चाटवाले से उन्होंने अनेक कहानियां सुनी थी और पिताजी से 'चन्द्रकांता संतति'उपन्यास के किस्से सुने थे। कथा-कहानियों के संस्कारों का प्रभाव उन पर बचपन में ही पड़ा। इसी प्रभाव के फलस्वरूप बचपन में ही उन्होंने तीन सामाजिक उपन्यास लिखे किशोर भावुकता के उपन्यास। राजेन्द्र यादव के उपन्यास लेखन का यह अभ्यास था। इसी प्रकार आरम्भ में उन्होंने ब्रज भाषा में कविताएं भी लिखी।

किन्तु उन्हें अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं लगी। अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति देने में कविता का क्षेत्र उन्हें सीमित लगा। बचपन से ही उपन्यास विधा उनकी प्रिय विधा हो गई। कहानियों की ओर उन्होंने बहुत बाद में रूख किया। 'प्रतिहिंसा' उनकी पहली कहानी है। यह कहानी प्रयाग से प्रकाशित होने वाली 'कर्मयोगी, पत्रिका में मई 1947 में प्रकाशित हुई थी। एक ओर एम.ए. की पढ़ाई जारी थी तो दूसरी ओर इसी काल में 'प्रेत बोलते हैं' उपन्यास का लेखन भी जारी था। यही उपन्यास आगे 'सारा आकाश' नाम से प्रकाशित हुआ जिस पर बासु चटर्जी ने सन् 1972 में फिल्म बनाई। बाद में हंस, गुलदस्ता, अप्सरा आदि पत्र-पत्रिकाओं में छपने का सिलसिला शुरू हुआ। सन् 1950 से पहले एक कहानी संग्रह ''रेखाएं, लहरें और परछाइयां भी छप गया था। देवताओं की मूर्तियां'' बीकानेर से छपा था जो उनका दूसरा कहानी संग्रह था। उस समय जोश भरे वातावरण में उन्होंने खूब लिखा। उन्हीं के शब्दों में ''उस समय का खौलता हुआ वातावरण आज भी याद करने की चीज है जब हर दिन कुछ न कुछ लिखने की स्फूर्ति लगातार मन में बनी रहती थी। विभाजन और ''यह आजादी झूठी है'' का उर्दू वाला दौर भी हिन्दी को प्रभावित कर रहा था। इलाहाबाद, बनारस, आगरा, लखनऊ, बम्बई, दिल्ली सभी उद्वलेनों के केन्द्र थे। . . . सारी रात लालटेन के पास चिपका मैं कहानी लिखता रहता था।''35 एम.ए. की छमाही परीक्षा के दिन थे। चार-छः दिनों के बाद भाषा विज्ञान जैसे कठिन विषय का पेपर था और राजेन्द्र यादव लालटेन की रोशनी में रातभर 'खेल खिलौने' कहानी खिलने में जुटे हुए थे। राजेन्द्र यादव का साहित्य-क्षेत्र में पर्दापण इनके कहानी संग्रह 'खेल खिलौने' से हुआ। 'खेल-खिलौने' कहानी संग्रह के प्रकाशन के साथ ही राजेन्द्र यादव का लेखक मुखरित हो उठा।

लेखन का प्रारम्भ तथा प्रेरणा

राजेन्द्र यादव के जीवन में साहित्यिक प्रेरणा के अंकुरण तभी फूटने लगे थे जब वे 'भिक्खी चाटवाले से तरह-तरह की कहानियां सुना करते थे। सन् 1946 में राजेन्द्र यादव झाँसी से आगरा वापस आ गए। भारत-पाक विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों ने इनके लेखन हृदय को अत्यधिक प्रभावित किया जिसका परिणाम थी उनकी प्रथम कहानी-'प्रतिहिंसा'। 'सुधा माधुरी' नामक पत्रिका जो झाँसी से प्रकाशित होती थी, ने इनके साहित्यिक उत्साह को बढ़ाया। झाँसी में यादव के पड़ोसी सुधीन्द्र वर्मा की साहित्य में विशेष रूचि थी। उनकी इस रूचि का प्रभाव यादव पर अवश्य ही रहा होगा। झाँसी से ही उन दिनों 'जागरण' नामक पत्र निकलता था जिसके सम्पादक श्री श्याम प्रसाद दीक्षित थे। राजेन्द्र यादव जब श्री दीक्षित के सम्पर्क में आए तो उनका परिचय बंगला कथाकार शरतचन्द्र से हुआ और उन्हीं की प्रेरणास्वरूप यादव, शरतचन्द्र के उपन्यासों की ओर आकृष्ट हुए। 'जागरण' पत्र में उनके लेख व कविताएं प्रकाशित होती रहती थी। इनका यह प्रारम्भिक प्रयास था लेकिन इसी प्रयास से आगे बढ़ते हुए उनमें आत्म-विश्वास पैदा हुआ। इसी प्रकार राजेन्द्र यादव के नानाजी उन्हें पत्र द्वारा उकसाते थे कि वे वीर सावरकर की रचनाएं और 'बंदी जीवन' पढ़े।

लम्बे-लम्बे पत्रों द्वारा नानाजी राजेन्द्र यादव को कहानियां लिखने का आदेश देते थे। परन्तु कहानी की अपेक्षा उपन्यास लेखन में अधिक रूचि होने के कारण राजेन्द्र यादव नानाजी

को सख्ती से पत्र लिखते - "आप जितना भी कहिए मैं कहानियां नहीं लिखँूगा। जब कोई उपन्यास लिख सकता है, तो कहानी क्यों लिखे?" 36 तब शायद अपने अनुभवों को मूर्त रूप देने में कहानी विधा उन्हें सीमित लगी होगी। परन्तु आज हम देखते है। कि उपन्यास के साथ ही कहानी विधा उनके लिए अत्यन्त प्रिय है। इनके अलावा उनकी माँ तीसरे दर्जे तक पढ़ी थी पर पढ़ने की लगन उनमें बहुत थी। घर में पढ़ने के लिए हिन्दी, मराठी की पत्रिकाएं मंगाती। राजेन्द्र यादव को कोई पुस्तक पढ़ने के लिए देती और उनसे उस पुस्तक की समीक्षा लिखवाती। उनकी लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता-पिता का प्रदेय महत्त्वपूर्ण है।

हिन्दी कथा जगत् में राजेन्द्र यादव का स्थान अग्रगण्य है। उनका कहानी साहित्य उन्हें हिन्दी साहित्यकारों की श्रेणी में विशेष स्थान प्रदान करता है। कहानी व उपन्यास साहित्य के अतिरिक्त उन्होंने मन्नू भण्डारी के

साथ "एक इंच मुस्कान" नामक उपन्यास लिखा है। कविता संकलन, संपादन कार्य, संस्मरण आलोचना कृतियों के माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य जगत् को एक अनुपम देन प्रदान की है।

बहुमुखी प्रतिभा

राजेन्द्र यादव बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उनकी प्रतिभा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। उन्होंने कहानी और उपन्यास क्षेत्र में ही अपना योगदान प्रदान नहीं किया है बल्कि उन्होंने सम्पादन कार्य, प्रकाशनकार्य, आलोचनाए, अनुवादक, संस्मरण और पत्र और डायरी लेखन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है उनकी प्रतिभा के विविध क्षेत्रों का परिचय इस प्रकार है

साहित्य की समीक्षा

राजेन्द्र यादव ने संक्षिप्त तथा पुस्तककार समीक्षाए भी की हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं की भूमिका में पाठकों से सीधे रूप में बातें करने का प्रयत्न किया है। 'कथायात्रा' और 'एक दुनिया समानांतर' की भूमिकाए काफी विस्तृत हैं। इनके अतिरिक्त 'कहानी: स्वरूप और संवेदना' तथा 'अठारह उपन्यास' नाम की समीक्षा पुस्तकंे स्वतंत्र रूप से लिखी हैं। 'औरों के बहाने' संस्मरणों की पुस्तक है। इन संस्मरणों में व्यावहारिक आलोचना के अनेक अंश हैं। राजेन्द्र यादव का अधिकांश समीक्षा लेखन कहानी के संबंध में है। इसके अलावा प्रेमचंद की विरासत, कांटे की बात (बारह खण्ड) सन् 1968, कहानी:अनुभव और अभिव्यक्ति, उपन्यास स्वरूप और संवेदना 1998, आदमी की निगाह में औरत, 2001, वे देवता नहीं है 2001 और मुड़-मुड़ के देखता हूँ (आत्मकथ्य) 2002 अब वे वहां नहीं रहते, 2007, काश मैं राष्ट्रद्रोही होता- 2008, जवाब दो विक्रमादित्य साक्षात्कार 2007 आदि की समीक्षा उन्होंने की है।

सम्पादक व अनुवादक

राजेन्द्र यादव ने अपने समकालीन तथा नव लेखकों को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से अगस्त 1986 से 'हंस' मासिक का सम्पादन कार्य आरम्भ किया। 'हंस' मासिक आरम्भ में सन् 1930 को प्रेमचन्द ने किया था, किन्तु बाद में यह बंद पड़ गया था। राजेन्द्र यादव ने इसे नए सिरे से शुरू किया। स्वयं राजेन्द्र यादव के शब्दों में "सन् 1930-36 के हंस की प्रतिलिपिया हम पुनप्ररस्तुत करने नहीं जा रहे हैं। वह 'हँस' अपने समय से जुड़ा था और यह 'हंस' अपने समय और मुहावरे से जुड़ सके, यही हमारा प्रयास है।"37 राजेन्द्र यादव ने 'हँस' के सम्पादन को व्यावसायिक आयोजन नहीं माना। आज के इस मासिक में हिन्दी के अधिकतर नवलेखन एवं लेखिकाओं का कथा-साहित्य ही स्थान पाता है और अपने युग की जनचेतना का प्रतिनिधित्व करता है। राजेन्द्र यादव का अनुवाद कार्य भी व्यापक है। उनके अनुवाद कार्य निम्नलिखित है

(क) उपन्यास:

1. अजनबी - मूल लेखक कामू
2. हमारे युग का एक नायक - मूल लेखक लर्मन्तोव
3. एक मछुआ: एक मोती - मूल लेखक स्टाइन बैक
4. बसंत प्लावन - मूल लेखक तुर्गनेव
5. प्रथम प्रेम - मूल लेखक तुर्गनेव
6. टक्कर - मूल लेखक चैखव
7. संत सर्गीयस - मूल लेखक टालस्टॉय

(ख) नाटक:

1. हँसनी - मूल लेखक चैखव

www.ignited.in

2. चेरी का बगीचा - मूल लेखक चैखव

3. तीन बहनें - मूल लेखक चैखव

इसके अतिरिक्त राजेन्द्र यादव का कविता संकलन 'आवाज तेरी है'

(सन् 1960) नाम से प्रकाशित है।

राजेन्द्र यादव की रचना-दृष्टि तथा चिन्तन पर युग का प्रभाव

भारतीय इतिहास की एक महान घटना है 'स्वतंत्रता की प्राप्ति' जिसने न केवल राजनीतिक क्षेत्र में नया मोड़ ला दिया है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक क्षेत्रों में भी नई दिशा का उजागर किया है। साथ-साथ नई जीवन समस्याओं को जन्म दिया है। स्वतंत्र भारत के पास एक ओर सपने, आशाएं और आकांक्षाएं रही हैं तो दूसरी ओर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, पारिवारिक तथा व्यक्तिगत सम्बन्धों की समस्याएं रही हैं। एक ओर राष्ट्र एवं समाज सेवा को सुधारने का संकल्प रहा है तो दूसरी ओर वैयक्तिकता तथा भोगवादिता का आकर्षण भी। फलस्वरूप स्वातंत्र्योत्तर परिवेश गठन और विघटन, नैतिक और अनैतिक के संघर्ष से युक्त है। आजादी के बाद भारतीय संविधान लागू होने पर देशवासी भविष्य के प्रति आशान्वित कि उन्हें अपने व्यक्तित्व विकास तथा समृद्ध जीवनयापन का सुअवसर प्राप्त होगा। भारतीयों के जीवन को सुखी, सुरक्षित एवं समृद्ध बनाने के लिए अनेक प्रयास किए जाने लगे। पंचवर्षीय योजनाओं को कार्यान्वित किया गया। जमींदारी उन्मूलन, अस्पृश्यता अधिनियम बनाकर देशवासियों के उत्थान के लिए शैक्षिक सुविधा स्वास्थ्य विषयक सुविधा की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। परन्तु इन प्रयासों के साथ-साथ कुछ गतिरोध भी आए, जिससे विकास के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न हुई। नेता लोग देश-सेवा, देश उन्नति के बदले चुनाव जीत लेने में अधिक रूचि लेने लगे। राजनीतिक स्तर पर हुए नैतिकता के ह्रास ने भ्रष्टाचार, शोषण, स्वार्थ जैसी प्रवृत्तियों को जन्म दिया।

आजादी के पश्चात् का भारतीय समाज पूर्ववर्ती समाज से अलग है। शिक्षा का प्रसार, सुधारवादी आंदोलन, पाश्चात्य संस्कृति से सम्पर्क, औद्योगिक क्रांति, वैज्ञानिक प्रगति आदि के कारण एक नया समाज सामने आया। नारी के लिए नए रूप का जन्म हुआ। उसमें आत्मगौरव, स्वाभिमान, आकांक्षा अधिकार जैसे भावों का विकास होने लगा। भारतीय सामाजिक जीवन के आर्थिक परिवेश में काफी परिवर्तन आया। अर्थ जीवन मूल्य बन गया। जिस कारण चारों ओर नैतिकता का ह्रास होकर अनैतिकता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और बेईमानी की मनोवृत्तियां फैलती गई। राजेन्द्र यादव हिन्दी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वे स्वातन्त्र्योत्तर काल के महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं। "राजेन्द्र यादव साठोत्तरी भारत की सही तस्वीर प्रस्तुत करने वाले ऐसे रचनाधर्मी हैं, जिनमें आजादी के बाद आए बदलाव की सही तस्वीर तो है ही, उसके साथ राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के विरूद्ध आक्रोश है ऐसा आक्रोश जिसमें कुण्ठा के स्थान पर संघर्ष चेतना है, संघर्षशीलता एवं क्रान्तिकारिता है।

इसलिए राजेन्द्र यादव शहरी मध्यवर्ग से लेकर ग्राम जीवन स्थितिथियों के परखी रचनाकार हैं।"38 राजेन्द्र यादव की कथा-साहित्य में अधिकतर महानगरीय जीवन का चित्रण हैं। महानगरीय संवेदनाएं उनकी कहानियों और उपन्यासों में अपने यथार्थ रूप में उभर कर आयी हैं। मूल्यों की टूटन महानगरों और नगरों में अधिक दिखाई देती है। स्वंतत्रता प्राप्ति के पश्चात् संबंधों में बदलाव आया है। मूल्य टूटे हैं दृष्टिकोण बदले हैं, बौद्धिकता ने अनेक विश्वासों को तोड़ा है और जीवन पद्धति में भी उल्लेखनीय अन्तर आया है। नगर बोध के अंतर्गत आधुनिकता, परम्परा से मुक्ति के लिए प्रयत्न, कृत्रिम जीवन प्रणाली, काला बाजारी, अनैतिकता, सम्बन्धों में परिवर्तन, प्राचीन और नवीनता के मध्य संघर्ष, ऊब, अकेलापन, अविश्वास, क्षणबोध, स्त्री-पुरूष सम्बन्धों का टूटना आदि संवेदनाएं प्रमुख हैं। राजेन्द्र यादव के कथा-साहित्य में महानगरीय बोध की इन सभी स्थितियों को देखा जा सकता है। उनकी 'टूटना', 'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'जहा लक्ष्मी कैद है', 'शहर की यह रात और . . ., तथा अन्य अनेक कहानियों में और उनके उपन्यासों में भी महानगरीय बोध की झांकिया देखी जा सकती हैं। राजेन्द्र यादव के कथा-साहित्य में अधिकांशतः महानगरीय जीवन व निम्न मध्यवर्गीय जीवन व्यक्तित्व हनन की स्थिति है। इस प्रकार राजेन्द्र यादव का रचना संसार अपने परिवेश की उपज है। इनके पात्र हमारे यथार्थ जीवन के लिए हुए हैं तथा आज के यथार्थ को झेलने एवं भोगने वाले हैं। 'उनकी बेबाक टिप्पणियों ने जहा कथा समीक्षा को धार दी, वहीं उपेक्षितों एवं शोषिता के प्रति यथार्थ से जुड़ी सच्ची संवेदना ने स्वतन्त्रता के बाद की जिजीविषा को वाणी दी है।

राजेन्द्र यादव समान्तर कहानी के ऐसे रचनाकार हैं जो साठोत्तरी कहानी को वायवी कल्पना से हटाकर ठोस जमीन

को तलाशती है जहा सामाजिक बदलाव के प्रति ललक और प्रेरणा विद्यमान है। उन्होंने साठोत्तरी राजनीतिक, सामाजिक परिवेश को केन्द्र में रखकर आज के व्यक्ति और समाज को प्रस्तुत किया है। इसमें दलित, शोषित वर्ग और नारी को प्रमुखता मिली है। "आजादी के बाद जो टूटन आयी है उसका केन्द्र बिन्दु व्यक्ति है। वैयक्तिक स्वातंत्र्य की कामना ने सामाजिक बन्धनों को जितना अधिक उन्मुक्त किया है उतना ही वह एकांकी होता गया। व्यक्ति चाहे सुविधाजीवी या सम्पन्न हो, चाहे दलित और शोषित उसका जीवन एकाकीपन के कारण असहाय और अजनबी हो गया है। मिथ्या अंहबोध के कारण इस टूटे बिखरे व्यक्ति की पहचान राजेन्द्र यादव कराते हैं। इस व्यक्ति चरित्र में नगरीय एवं ग्राम्य दोनों समाजों के व्यक्ति है किन्तु उनकी संख्या अधिक है जो गाँवो से पलायन करके महानगरों में गुम हो चुके हैं। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि राजेन्द्र यादव ने सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक स्थितियों को केन्द्र में रखकर अपने साहित्य का सृजन किया है।"

उपसंहार

सामाजिक चेतना शब्द का अर्थ मात्र सामाजिक जागृति ही नहीं, वरन् प्रत्येक मानवीय समस्या पर सामूहिक दृष्टि से विचार करना है। समस्त सामाजिक विषमताओं से संबंधित नागरिक जीवन की समानतामूलक भावना ही सामाजिक चेतना है । भारतीय साहित्य में सामाजिक चेतना की कथा हजारों वर्ष पुरानी है, जिसका उल्लेख वेद, बुद्ध और वेदान्त की वाणी में भी मिलता है जहाँ समाज को नूतन ऊँचाइयों तक ले जाने का आह्वान किया गया है । उन्नीसवीं शती तक आते आते पश्चिम की जीवन-पद्धति के संपर्क से सामाजिक चेतना को नूतन आधार और आकार प्राप्त हुआ, जहाँ समाज संकीर्णता यानी व्यक्तिवादी चेतना से मुक्त होकर समष्टिवादी चेतना में प्रविष्ट होने लगा । इस शती में अनेक समाजसुधारकों के द्वारा समाज के अंधविश्वासों, अत्याचारों, सतीप्रथा, अन्याय, अनीति, शोषण आदि का विरोध, विधवाविवाह का समर्थन, बालविवाह का निषेध आदि पर गहरी चोटकर समाज को पुनर्गठित करने का प्रयास किया गया ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, त्रिभुवन; हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण: 1955
2. काजल, डॉ. अजमेर सिंह; उपन्यासकार राजेन्द्र यादव, संजय प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण: 2015
3. परदेशी, डॉ. भाउसाहेब और देवरे, शिवाजी; राजेन्द्र यादव का रचना संसार, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण: प्रथम 2005
4. सिंह, त्रिभुवन; हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण: 1955
5. यादव, राजेन्द्र; कहानी: स्वरूप और संवेदना, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण: 1985
6. यादव, राजेन्द्र; अठारह उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 1999
7. चव्हाण, डॉ. अर्जुन; राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण: 1995
8. यादव राजेन्द्र; औरों के बहाने, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण: 1985
9. सोनवणे, डॉ. चन्द्रभानु; कथाकार राजेन्द्र यादव, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण: 1982
10. गीताश्री (सं.); 23 लेखिकाएँ और राजेन्द्र यादव, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2010

Corresponding Author

Shashikant Kumar*

Research Scholar

www.ignited.in